हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या – 06

घनानंद की प्रेमानुभूति में स्वच्छंदता

घनानंद अपने मनोवेगों के प्रवाह में बहकर कविता लिखा करते थे। इनकी दृष्टि में काव्यशास्त्र के नियम-उपनियम नहीं रहते थे। इसलिए इनके काव्य में प्रेम की जीवनगत स्वच्छंदता तथा काव्यगत स्वच्छंदता दोनों के दर्शन होते हैं। घनानंद की दृष्टि प्रेम भाव की अनुभूति पर अधिक रहती थी। वे काव्य में चिंतन करते थे। फलतः इनकी अंतर्दृष्टि प्रेमानुभूति को पहचानने में बड़ी व्यापक और सूक्ष्म हो गई। घनानंद का प्रेम केवल नारी के स्थूल सौन्दर्य तक कभी सीमित न रहा। वह ईश्वर पर्यंत ऊँचा उठा। इनकी रचनाओं में अश्लील मुद्राओं व अश्लील चेष्टाओं के वर्णन नहीं मिलते। संभोग में मनोवैज्ञानिकों के विविध रूपों का चित्रण किया गया है। घनानंद के यहाँ प्रेम का बाह्य पक्ष इतना प्रबल नहीं है जितना आंतरिक पक्ष, क्योंकि उनकी दृष्टि ही आंतरिक है।

कंत रमै उर-अंतर में सु लहै नहीं क्यों सुखरासि निरंतर ।

प्रिय हृदय में बसे हुए हैं फिर भी विरही को सुख का अनुभव नहीं हो रहा है। विरही की विरह-व्यथा देखकर वे भी दाँतों तले उंगली दबाते हैं जो विरह-वेदना की आँच में पके हुए हैं। असल में स्वच्छंद मनोवृत्ति वाले प्रिय के विरह में जो दुःख मैं रात-दिन सहन कर रही हूँ उसे रात-दिन ही समझ सकते हैं, दूसरा कोई उसे समझ नहीं सकता। अगर कोई इस विरह को बताने की कोशिश करे भी तो वह वैसा ही होगा जैसा दिन और रात में अन्तर होता है। विरही विरह से पीड़ित है परंतु उसके विरह को वह क्या कोई भी व्यक्त नहीं कर सकता। इसे वाणी से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह अनुभूति हृदय की है और इसे हृदय ही अनुभव कर सकता है। इसके वर्णन के लिए कोई शब्द नहीं बने हैं। चुपचाप सहते रहो, पर मौन रहो - यही तो घनानंद की प्रेम का आदर्श है।

घनानंद ने प्रेम व्यापार के कृत्रिम रूपों को त्याग किया है। उनकी चेतना विरह और मिलन दोनों में प्रेमियों के हृदयों के

अंतस्थलों को उद्घाटित करने में ही लगी रहती है। घनानंद का प्रेमी तो स्वयं ही अपनी प्रेम भावना को नहीं पहचान पाता।

'बैसत बूझत बौराई खसै'

रीतिमार्गी कवि बुद्धि के बल से ही भाव का अनुमान करते थे और उसी के बल वे प्रेम बाह्य रूप विधान का संधान करते थे। घनानंद ने प्रेम को हृदय की शुद्ध, निश्छल भाव धारा माना है। बुद्धि का उसमें गौण स्थान रहा है। वे हृदय को प्रमाण मानते हैं। रीतिमार्गी कवि सखी, दूती आदि द्वारा प्रेम निवेदन करते हैं। वे प्रेम निवेदन की सामाजिक शालीनता की रक्षा करते हैं। किन्तु घनानंद अपनी स्वच्छंद प्रवृत्ति के कारण उसकी उपेक्षा करते हैं। प्रेमानुभूति कवि की व्यक्तिगत अनुभूति पर आधारित है इसीलिए उसे वह स्वयं ही प्रेमी बनकर प्रकट करता है।

घनानंद कहावत शैली में विरह व्यथा की नाप-जोख नहीं करते उनका वियोग बहुत बड़ा है। वह संयोग में भी बना रहता है।

रीतिमार्गी लौकानुभूति का वर्णन करते थे, किन्तु घनानंद ने स्वात्मानुभूति को काव्य का विषय बनाया है। घनानंद के स्वच्छंद प्रेम का चरम उत्कर्ष विषमता में ही निष्पन्न होता है, जबकि रीतिमार्गी ने सम प्रेम को अपनाया है।

प्रस्तुतकर्ता

वेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो॰न॰- 8292277041

दिनांक
10/10/2020